Date :

HISTORY (H)

PAPER- III

UNIT- I

B. - Polity.

(ii) political developments:-

Rashtrakutas (political development)

राष्ट्रकूट

⇒ **राष्ट्रकूट साम्राज्य की स्थापना:**

राष्ट्रकूट वंश की स्वतंत्रता का जन्मदाता प्रथम शासक दन्तिदुर्ग था। वह इन्द्र की भवनागा नामक राजकन्या से उत्पन्न हुआ था। उसकी उपलब्धियों के विषय में हम उस समय के दो लेखों — दशावतार (742 ई०) तथा समनगढ़ के लेख (753 ई०)

Scanned with CamScanner

से जानकारी मिलती है।
दन्तिदुर्ग ने बादामी के चालुक्य शासक विक्रमादित्य द्वितीय के सामन्त के रूप में अपना जीवन प्रारंभ किया। इसी रूप में उसने कुछ विजयें कर अपनी शक्ति एवं प्रतिष्ठा भी आगे बढ़ाया।

(1) कृष्ण प्रथम :-
दन्तिदुर्ग ने 756 ई० के लगभग तक शासन किया। वह निःसंतान मरा। अतः उसके बाद उसका चाचा कृष्ण प्रथम शासक बना था। कृष्ण प्रथम भी दन्तिदुर्ग के समान एक साम्राज्यवादी शासक था।
उसके राजा बनते ही लाट प्रदेश के शासक के द्वितीय जो उसका भतीजा था, ने विद्रोह कर अपनी स्वतंत्रता घोषित कर दी।

Scanned with CamScanner

Date :

→ गंगवंश के विरुद्ध सफलता:-

चालुक्य राज्य पर अधिकार करने के बाद कृष्ण ने मैसूर के गंगों पर आक्रमण कर उसने उनकी अधीनता स्वीकार कर लिया।

उसने गंगों की राजधानी मान्यपुर (बंगलौर स्थित मन्नपुर) के ऊपर अधिकार कर लिया। 769 ई० में कृष्ण अपनी राजधानी वापस लौट आया वहाँ जाकर उसने कृष्ण के सामन्त के रूप में शासन स्वीकार किया।

→ वेंगी के चालुक्य पर अधिकार:-

कृष्ण ने बड़े पुत्र गोविन्द को युवराज बनाया तथा उन्हें वेंगी के पूर्वी चालुक्यों पर आक्रमण करने के लिए भेजा। गोविन्द को सफलता मिली और उसने अपनी सेना के साथ कृष्णा और मुसी नदियों

Scanned with CamScanner

SELCO

Date :

के संगम पर शिविर मे डाल दिया।

⇒ गोविन्द द्वितीय :-

कृष्ण प्रथम के दो पुत्र थे - गोविन्द द्वितीय तथा ध्रुव। गोविन्द अपने पिता के समय मे ही अनेक युद्धो मे ख्याति प्राप्त कर चुका था। अतः वही कृष्ण प्रथम के बाद राजा बना। उसने अपने छोटे भाई ध्रुव को नासिक का राज्यपाल नियुक्त किया।

कुछ दिनों के बाद दोनो भाईयों के बीच युद्ध हुआ एवं गोविन्द संभवतः मारा गया।

⇒ ध्रुव 'धारावर्ष'

गोविन्द द्वितीय के बाद राष्ट्रकूट शासन की बागडोर उसके सुयोग्य तथा यशस्वी भाई ध्रुव के हाथों मे आ गई। इसके काल में राष्ट्रकूटो

Scanned with CamScanner

Date :

की शक्ति एवं प्रतिष्ठा का चतुर्दिक विकास किया।

⇒ गोविन्द के सहायकों पर अधिकार तथा अधिकार :—

राजधानी मे अपनी स्थिति सुदृढ़ कर लेने बाद ध्रुव अपने भाई के सहायकों को दंड दे चला। इस समय यहाँ पर गंग वंश का शासक था। वह पराजित हुआ तथा ध्रुव ने उसने साम्राज्य में मिला लिया।

इससे राष्ट्रकूट राज्य की दक्षिण सीमा कावेरी तक पहुँच गई। इसके बाद पल्लव नरेश को पराजित करके वह वहाँ से हाथियों का उपहार प्राप्त किया।

⇒ गोविन्द तृतीय :-

ध्रुव के चार पुत्र थे- कर्क स्तम्भ, गोविन्द तथा इन्द्र।

गोविन्द तृतीय अपने पिता का उत्तराधिकारी बना

SELCO

Date : ________

यह सूरत लेख से पता चलता है कि उसने गोविन्द तृतीय को अपना उत्तराधिकारी बनाया।

→ स्तम्भ का विद्रोह तथा उसका दमन :

स्तम्भ एक वर्षतक तो शांत रहा किन्तु सिंहासन का मोह बराबर सताता रहा। उसने गोविन्द से शासन छीनने के उद्देश्य से उसके विरुद्ध बारह राजाओं को पराजित किया।

→ दक्षिण की विजय :

गोविन्द की गृहराज्य से अनुपस्थित का लाभ उठाते हुए सुदूर दक्षिण के द्रविड़ शासकों ने उसके विरुद्ध एक संघ तैयार किया। इसमें - पल्लव, पांड्य, चोल केरल तथा पश्चिम शासक सम्मिलित थे। इस संघ ने गोविन्द के राज्य पर आक्रमण

Scanned with CamScanner

Date :

कर दिया।

तुंगभद्रा नदी के तट पर गोविन्द ने इन सभी राजाओं को पराजित किया।

→ अमोघ वर्ष :-

गोविन्द तृतीय के बाद उसका पुत्र अमोघवर्ष 814 ई० में गद्दी पर बैठा। इस समय वह अवयस्क था। अतः गुजरात के राष्ट्रकूट वंश के संरक्षक के रूप में कार्य करना प्रारंभ किया। 817 ई० के लगभग उसके विरुद्ध एक विद्रोह हुआ। इस विद्रोह का नेतृत्व वेंगी के चालुक्य शासक विजयादित्य द्वितीय ने किया तथा उसके सामंतों पर अधिकार कर लिया।

धीरे-धीरे अमोघवर्ष की पराजित हुआ।

→ कृष्ण द्वितीय :-

Scanned with CamScanner

Date : ________

अमोघवर्ष प्रथम की मृत्यु के बाद उसका पुत्र कृष्ण द्वितीय शासक बना। उसने मालवा के प्रतिहार शासक भोज तथा वेंगी के चालुक्य नरेश विजयादित्य तृतीय से लम्बा संघर्ष हुआ। मालवा के प्रतिहार तथा राष्ट्रकूटों के बीच शत्रुता थी।

कृष्ण द्वितीय के राजा बनने के बाद प्रतिहार शासक मिहिरभोज ने उसके राज्य पर आक्रमण कर दिया जिसमें विजयश्री प्रतिहारों के हाथ लगी

⇒ इन्द्र तृतीय:

कृष्ण द्वितीय के बाद पौत्र इन्द्र तृतीय (914–922 ई.) में राजा बना। अल्तेकर के अनुसार इन्द्र के राज्यारोहण के ठीक पहले या ठीक बाद प्रतिहारों के सामंत मालवा के परमार शासक उपेन्द्र ने

नासिक के ऊपर आक्रमण कर
गोवर्धन में घेर लिया

⇒ अमोघवर्ष द्वितीय:–

इन्द्र तृतीय का पुत्र तथा उत्तराधिकारी अमोघवर्ष द्वितीय हुआ। इसके शासन काल में भी अनेक युद्ध हुए। राजा बनने के एक वर्ष के भीतर वह मृत्यु का शिकार हुआ।

⇒ गोविन्द चतुर्थ:

अमोघवर्ष की मृत्यु के बाद गोविन्द चतुर्थ शासक बना। वह विलासी प्रवृत्ति के कारण इसका शासन शिथिल पड़ गया।

⇒ अमोघवर्ष तृतीय:

गोविन्द चतुर्थ के सौतेले भाई के अमोघवर्ष तृतीय शासक बना और वह धार्मिक प्रवृत्ति था। उसका भी शासन

का संचालन सही से नहीं कर पाया।

⇒ **कृष्ण तृतीय :**

राज्यारोहण के समय इसने 'अकालवर्ष' की उपाधि धारण की। राजा बनने के बाद इसने आंतरिक स्थिति सुदृढ़ की। ९४९ ई० में इसने चोल शासक परांतक पर आक्रमण कर दिया।

इसका अभियान सफल रहा तथा वह तंजौर तथा कांचीपुरम पर अधिकार कर लिया।

⇒ **खोट्टिग :-**

कृष्ण तृतीय निःसंतान मरा। अतः उसका भाई खोट्टिग उसके बाद राष्ट्रकूट का शासक बना। यह अत्यंत निर्बल शासक साबित हुआ। उसके समय में मालवा के परमार नरेश सीयक ने राष्ट्रकूट पर आक्रमण कर दिया।

2 कर्क द्वितीय :

खोट्टिग का उत्तराधिकारी उसका भतीजा कर्क द्वितीय हुआ। वह निर्बल एवं अयोग्य शासक था। वह केवल दो वर्ष (972-973 ई.) तक शासन कर पाया। इस काल में सामंत ने विद्रोह किए तथा उसे दबाने में असफल रहा।

बीजापुर जिला के सामंत तैल द्वितीय ने उसके ऊपर आक्रमण कर उसे पदच्युत कर दिया तथा सिंहासन पर अधिकार जमा लिया। 975 ई. तक तैल उसके अन्य सामंतों तथा सहयोगियों को एक तरह से समाप्त कर दिया। पश्चिम पर राज्य स्थापित कर लिया।

तैल ने जिस वंश की स्थापना की उसे कल्याणी के पश्चिमी चालुक्य वंश कहते

जाता है कर्क द्वितीय राष्ट्र-
कूट का अन्तिम शासक था।
उसके साथ ही दक्षिण पथ
से राष्ट्रकूटों के लगभग
दो सदियों का शासन
तथा शासन समाप्त हुआ

DR. UDAYKUMAR

Scanned with CamScanner